DR. RANJEET KUMAR
Deptt. Of History
H. D. Jain College Ara

E -Notes, B. A., Sem-4, MJC-4

13वीं शताब्दी से 1789 तक यूरोप के इतिहास

1. प्रस्तावना**:** मध्ययुग से आधुनिकता की ओर

13वीं शताब्दी से 1789 (फ्रांसीसी क्रांति) तक का यूरोपीय इतिहास एक गहरे संक्रमण का काल है। यह समय सामंती व्यवस्था, चर्च की सर्वोच्चता और कृषक-आधारित अर्थव्यवस्था से निकलकर राष्ट्रीय राज्यों, व्यापारिक पूँजीवाद, वैज्ञानिक चिंतन और लोकतांत्रिक विचारों की ओर बढ़ने का युग है।
इस काल को मोटे तौर पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है:

1. उत्तर मध्ययुग (13वीं–15वीं शताब्दी)

2. प्रारंभिक आधुनिक काल (15वीं–17वीं शताब्दी)

3. प्रबोधन युग और क्रांति-पूर्व यूरोप (17वीं–1789)

2. 13वीं शताब्दी का यूरोप**:** सामंतवाद और चर्च की शक्ति

(क) सामंती व्यवस्था

13वीं शताब्दी तक यूरोप में सामंतवाद (Feudalism) प्रमुख सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था थी।

- भूमि ही संपत्ति और शक्ति का स्रोत थी।
- राजा भूमि को सामंतों (लॉर्ड्स) को देता था।
- सामंत किसानों (सर्फ) से कर और श्रम लेते थे।

किसान भूमि से बँधे होते थे और उन्हें स्वतंत्रता नहीं थी। समाज तीन वर्गों में विभाजित माना जाता था:

1. पादरी वर्ग (चर्च)
2. कुलीन वर्ग
3. किसान

(ख) चर्च की सर्वोच्चता

कैथोलिक चर्च केवल धार्मिक संस्था नहीं था, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक शक्ति भी था।

- पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था।
- शिक्षा, कानून और नैतिकता पर चर्च का नियंत्रण था।
- विश्वविद्यालयों का विकास भी चर्च के संरक्षण में हुआ।

(ग) क्रूसेड्स का प्रभाव

11वीं से 13वीं शताब्दी तक चले धर्मयुद्धों (Crusades) का प्रभाव गहरा था:

- पूर्व और पश्चिम के बीच व्यापार बढ़ा।
- अरब दुनिया से विज्ञान, गणित और दर्शन का ज्ञान यूरोप पहुँचा।
- नगरों और व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ।

3. 14वीं शताब्दी**:** संकट और परिवर्तन

14वीं शताब्दी को यूरोप के लिए संकट का युग कहा जाता है।

(क) ब्लैक डेथ (1347–1351)

प्लेग महामारी ने यूरोप की लगभग एक-तिहाई आबादी समाप्त कर दी।

- श्रम की कमी हुई।
- किसानों की स्थिति मजबूत हुई।
- सामंती व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी।

(ख) सौ वर्ष का युद्ध (1337–1453)

इंग्लैंड और फ्रांस के बीच यह लंबा युद्ध राष्ट्रीय भावना के उदय का कारण बना।

- फ्रांस में जोन ऑफ आर्क का उदय।
- दोनों देशों में केंद्रीकृत राजसत्ता मजबूत हुई।

(ग) चर्च का संकट

एविग्नन पोपाई **(1309–1377):** पोप फ्रांस के एविग्नन में रहा।
महान विभाजन **(Great Schism):** एक समय दो पोप चुने गए।

इससे चर्च की प्रतिष्ठा कम हुई और धार्मिक सुधार की मांग बढ़ी।

4. पुनर्जागरण **(14**वीं**–16**वीं शताब्दी**)**

(क) अर्थ

पुनर्जागरण का अर्थ है "पुनर्जन्म" — प्राचीन ग्रीक-रोमन संस्कृति का पुनरुद्धार।

(ख) इटली में शुरुआत

फ्लोरेंस, वेनिस, जेनोआ जैसे नगर-राज्यों में व्यापारिक समृद्धि थी।
मेडीची परिवार ने कला और विद्या को संरक्षण दिया।

(ग) मानववाद (Humanism)

मानव को केंद्र में रखकर चिंतन।

- ❖ पेट्रार्क

- ❖ इरास्मस

(घ) कला और विज्ञान

- लियोनार्डो दा विंची
- माइकल एंजेलो
- राफेल
-

कला में यथार्थवाद और मानवीय भावनाओं का चित्रण बढ़ा।

(ङ) छापाखाना (1453 के बाद)

गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रण कला के आविष्कार से विचारों का तेज प्रसार हुआ।

5. भौगोलिक खोजें **(15**वीं**–16**वीं शताब्दी**)**

(क) कारण

- मसालों और सोने की खोज
- व्यापारिक मार्गों की आवश्यकता
- वैज्ञानिक प्रगति

(ख) प्रमुख खोजकर्ता

- कोलंबस (1492) – अमेरिका
- वास्को-दा-गामा – भारत
- मैगलन – विश्व परिक्रमा

(ग) परिणाम

- उपनिवेशवाद का प्रारंभ
- अटलांटिक व्यापार का विकास
- दास व्यापार
- यूरोप में पूँजीवाद का विस्तार

6. धार्मिक सुधार आंदोलन **(Reformation)**

(क) पृष्ठभूमि

चर्च में भ्रष्टाचार, पापमोचन पत्र (Indulgences) की बिक्री।

(ख) मार्टिन लूथर (1517)

- 95 सूत्र
- बाइबिल की सर्वोच्चता

(ग) अन्य सुधारक

- जॉन कैल्विन
- ज्विंगली

(घ) परिणाम

- प्रोटेस्टेंट धर्म का उदय
- यूरोप में धार्मिक युद्ध
- चर्च की एकता समाप्त

7. प्रतिरोध सुधार **(Counter Reformation)**

- कैथोलिक चर्च ने सुधार किए:
- ट्रेंट की परिषद
- जेसुइट संघ

8. 17वीं शताब्दी**:** निरंकुश राजतंत्र और युद्ध

(क) तीस वर्ष का युद्ध (1618–1648)

- कैथोलिक बनाम प्रोटेस्टेंट
- वेस्टफेलिया की संधि (1648)
- राष्ट्र-राज्य की अवधारणा मजबूत

(ख) फ्रांस में लुई XIV

- "मैं ही राज्य हूँ"
- वर्साय महल
- निरंकुश राजतंत्र का चरम

(ग) इंग्लैंड में संघर्ष

- चार्ल्स I और संसद
- 1649 में राजा का वध
- क्रॉमवेल
- 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति
- संसदीय राजतंत्र की स्थापना

9. वैज्ञानिक क्रांति

- कोपरनिकस
- गैलीलियो
- न्यूटन

तर्क और प्रयोग पर आधारित ज्ञान ने चर्च की पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी।

10. प्रबोधन युग **(18**वीं शताब्दी**)**

(क) प्रमुख विचारक

- लॉक – प्राकृतिक अधिकार
- रूसो – सामाजिक अनुबंध
- मोंटेस्क्यू – शक्तियों का विभाजन
- वोल्टेयर – धार्मिक सहिष्णुता

(ख) प्रभाव

- लोकतंत्र और समानता के विचार
- अमेरिकी क्रांति (1776)
- फ्रांसीसी क्रांति की वैचारिक पृष्ठभूमि

11. आर्थिक परिवर्तन

(क) वाणिज्यवाद (Mercantilism)

राज्य-नियंत्रित व्यापार नीति।

(ख) कृषि क्रांति

- नई फसलें
- घेराबंदी आंदोलन (Enclosure Movement)

(ग) औद्योगिक क्रांति की तैयारी

ब्रिटेन में औद्योगिक विकास के लिए आधार तैयार हुआ।

12. समाज और संस्कृति

- मध्यवर्ग (बुर्जुआ) का उदय
- शिक्षा का प्रसार
- महिलाओं की भूमिका में सीमित परिवर्तन

कला में बारोक और रोकोको शैली

13. क्रांति-पूर्व फ्रांस

- तीन वर्ग व्यवस्था (एस्टेट्स)
- करों का बोझ तीसरे वर्ग पर
- आर्थिक संकट
- प्रबोधन विचारों का प्रभाव

1789 में एस्टेट्स जनरल की बैठक से फ्रांसीसी क्रांति की शुरुआत हुई।

14. निष्कर्ष

13वीं शताब्दी से 1789 तक यूरोप ने गहरे परिवर्तन देखे:

- सामंतवाद से राष्ट्र-राज्य तक
- चर्च की सर्वोच्चता से वैज्ञानिक तर्कवाद तक
- कृषि अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी व्यापार तक
- निरंकुशता से लोकतांत्रिक विचारों तक

फ्रांसीसी क्रांति इस पूरे ऐतिहासिक विकास की परिणति थी। इसने "स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व" के सिद्धांतों के साथ आधुनिक यूरोप और विश्व राजनीति की दिशा बदल दी।